आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 02 | उदयपुर शनिवार 01 फरवरी 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

लोकलीलाओं से समृद्ध बारां अंचल

-घनश्याम वर्मा-

हाड़ौती अंचल के अनेक स्थानों पर चैत्र, वैशाख एवं ज्येष्ठ के महीनों में लोकोत्सव एवं लीलाएं होती थीं। लोक-लीलाओं के अधिकांश कथानक प्राचीन धर्म ग्रन्थों, इतिहास एवं प्रेमाख्यानों के लिए जाते। पेट्रोमेक्स की रोशनी में ही रात-रात भर कई दिनों तक आयोजन चलते रहते।

चैत्र के महीने में अनेक स्थानों पर रावण दहन एवं रामलीलाओं के आयोजनों की प्राचीन परम्परा आज भी विद्यमान है। दशमी को रावण

वध होता है। कई जगह वर्ष में दो बार भी रावण वध होता है। बारां जिले के पाटोदा, मंगरोल में हाड़ौती रामलीला, कोटा जिले के पीपल्दा ग्राम में ढाई कड़ी की हाड़ौती रामलीला तथा अटरू कस्बे में चैत्र की पूर्णिमा पर धनुष यज्ञ का अनूठा धनुषलीला का आयोजन विक्रम संवत् 1918 से हो रहा है जिसमें 35 फीट लम्बा धनुष आकर्षण का केन्द्र होता है। पाटोदा की ढाई कड़ी की रामलीला पिछले डेढ़ सौ वर्षों से चल रही है। यहां का रामलीला मण्डल भोपाल, चित्रकूट एवं अयोध्या आदि में भी अपनी प्रस्तुति दे चुका है।

पाटोदा में वर्ष में दो बार रावण वध होता है। मांगरोल में भी इसी तरह की हाड़ौती रामलीला पिछले डेढ़ सौ वर्षों से आयोजित हो रही है। कोटा जिले के पीपल्दा ग्राम में आयोजित हाड़ौती रामलीला अंचल की सर्वाधिक प्राचीन लोकलीला चैत्र के महीने में ही होती है। चैत्र माह में अंता पंचायत समिति के नियाणा, मानपुरा, खजूरना, केवड़ा में भी रामलीलाएं एवं रावण वध का आयोजन होता है। इन आयोजनों को

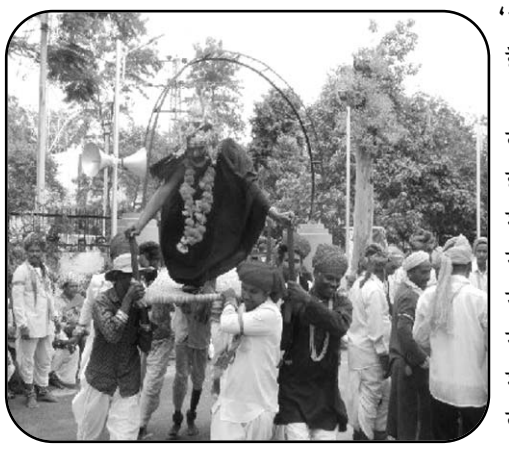

'सम्या' कहा जाता है।

नियाणा में सौ वर्षों से रामलीला हो रही है और चैत्र शुक्ला एकादशी को रावण वध होता है। खजूरना में रामलीला तथा चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दूसरे दिन प्रात: रावण वध का रिवाज है। केवड़ा में भी चैत्र शुक्ला एकादशी को रावण मारा जाता है। अटरू तहसील के सकतपुर ग्राम में चैत्र पूर्णिमा को 'ढोला मरवण' का मंचन किया जाता है। काचरा में 'नरसिंह लीला', समर में 'ढोला मारू' तथा कमोलट में 'रूकमणी मंगल' का आयोजन अब बन्द है।

अंता में गणगौर पर 'खेंवरो' नामक श्रृंगार प्रधान प्रेमाख्यान का मंचन होता है। रियासत काल में गांव-गांव में खेंवरा होता था। खेंवरा की भूमिका अदा करने वाले पात्र की नायिका आबलदे के भाई बाला द्वारा हत्या करने के प्रसंग को वास्तविक रूप में चरितार्थ कर देने के कारण कोटा के महाराव उम्मेदसिंहजी ने इसे बन्द करवा दिया था। अंता कस्बे के नीमड़ी पाला मोहल्ले में चैत्र शुल्क चतुर्थी को बोहराजी के चौक में खेंवरो का आयोजन रातभर चलता है।

अंता के समीप मानपुरा ग्राम में ज्येष्ठ के महीने में रूकमणी मंगल संवत् 2004 से प्रतिवर्ष हो रहा है। यह आयोजन गांव के मध्य बने लीला स्थल पर लगातार तीन रात तक होता है। सभी भूमिका पुरुष ही अदा करते हैं। रूकमणी मंगल में प्रतिदिन सायंकाल शहनाई एवं नगारे बजाये जाते हैं। समापन के अवसर पर सामूहिक भोज होता है।

यह हाड़ौती में लिखी चार कड़ी की छन्द रचना है जिसे मानपुरा के ही दुर्गाशंकर बोहरा ने लिखी है। इस रचना को पीलू बिरवा राग में गाया जाता है। जन धारणा है कि इससे फसल अच्छी होती है। मानपुरा में संवत् 1993 से 2004 तक 'मोरध्वज लीला' का मंचन हुआ। तत्पश्चात 2004 में रूकमणी मंगल और यदाकदा गोपीचन्द लीला भी होती है। नाटकों में भाग लेने वाले कलाकार गांव के ही होते हैं।

बारां जिले की किशनगंज तहसील के बजरंगगढ़ ग्राम में ज्येष्ठ माह में हरिश्चन्द्र नाटक का मंचन किया जाता है। कलाकार घरों से निकलकर आयोजन स्थल पर आते हैं। यह तीन रात तक चलता है। नाटक नहीं होने पर वर्षा भी अच्छी नहीं होती। आयोजन के समय झांकियां भी बनाई जाती हैं।

किशनगंज ग्राम में ग्रीष्मकाल के दौरान 'उखा चरित्र' (उषा चरित्र) हुआ करता था। इसकी अन्तिम प्रस्तुति 1986 में हुई थी। अंता के समीप सोरसन ग्राम में पिछले 100 सालों से ज्येष्ठ माह की किसी भी तिथि पर 'श्रीकृष्ण गेंद लीला' का आयोजन होता है जो तीन-चार रात तक चलता है। बारां जिले की अंता पंचायत समिति के हांपाहेड़ी ग्राम में ज्येष्ठ महीने में 'नरसीजी का मायरा' नाटक खेला जाता है। यह चौकड़ी छन्द शैली में लिखी मार्मिक रचना है।

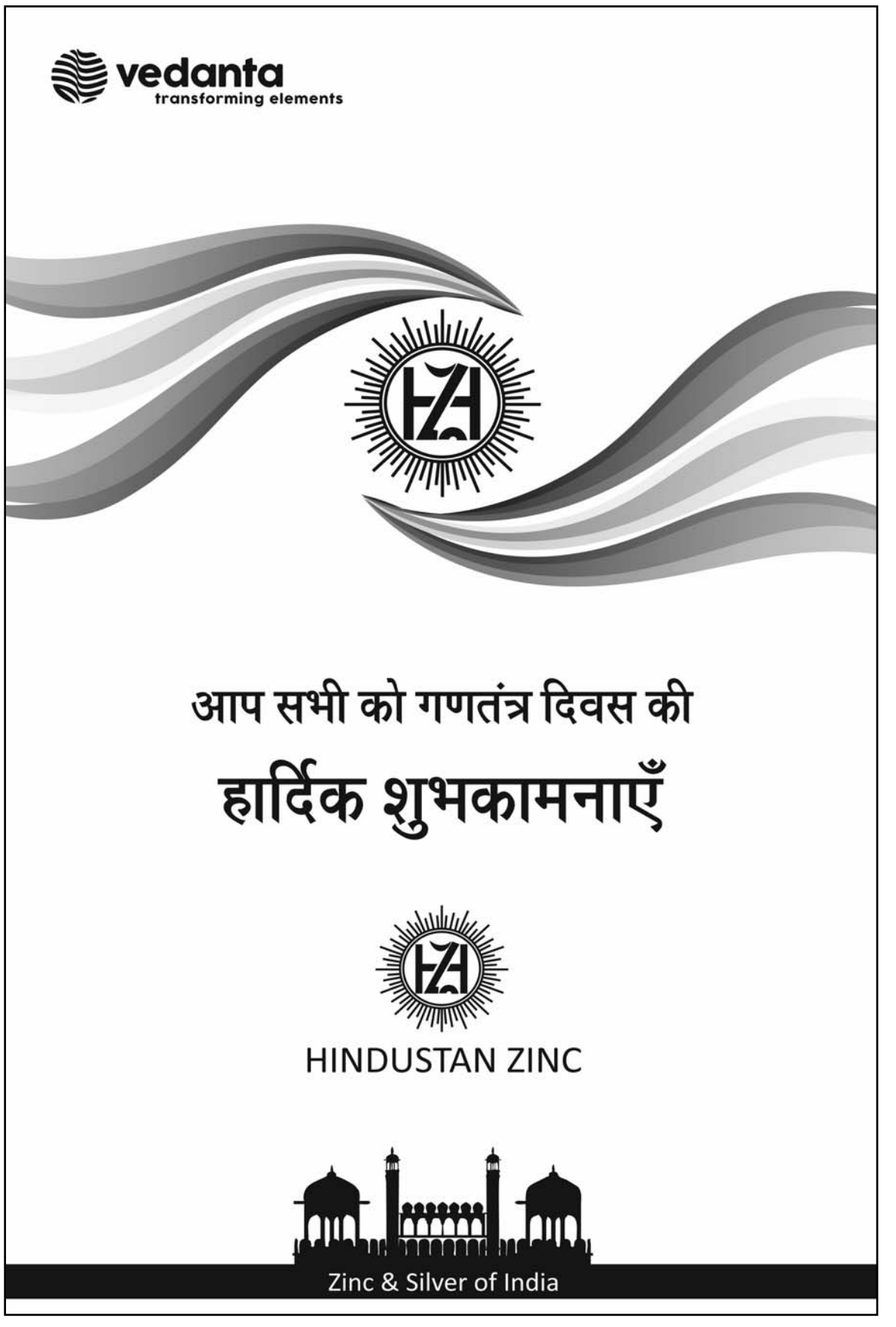

पोथीखाना

रामरतन कोचर की स्मृति में पठनीय ग्रन्थ

अभिनन्दन ग्रन्थ और स्मृति ग्रन्थ उन बिरले व्यक्तियों का ही निकलता है जो जीवन में धुन धनी होकर ऐसे कार्य करते हैं जिन्हें समाज लम्बे समय तक याद रखते उनसे प्रेरित होता है।

बीकानेर से डॉ. सतीश मेहता ने भाई श्री रामरतन कोचर स्मृति ग्रन्थ भेजा तो मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। इसलिए कि वहां 1954 से 1958 तक कॉलेज में अध्ययन के दौरान मैं रहा। उस समय शैक्षिक, साहित्यिक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक जितने भी कार्यक्रम आयोजित होते उनमें मैं रामरतनजी कोचर की उपस्थिति अवश्य पाता। उनके अलावा एक लालचन्दजी कोठारी थे।

वे भी हर कार्यक्रम की शोभा बनते। कोचरजी सबके केन्द्र में थे। उनका व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक और स्नेहिल मुस्कान लिये था जो सहज ही विरोधियों को भी अपना बना लेता था। देश में पं. जवाहरलाल नेहरू और राजस्थान में मैंने मोहनलाल सुखाड़िया का व्यक्तित्व भी ऐसा ही पाया।

जयपुर में जब-जब भी भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत के वहां रहा तो डॉ. सरोज कोचर से मिलना हो जाता। वे वहां के वीर बालिका महाविद्यालय में हिन्दी की व्याख्याता थीं जहां भाभीश्री डॉ. शान्ता भानावत प्रिंसिपल थीं। कोचर साहब सरोजजी के दादाजी होने से उनके सम्बन्ध में और अधिक जानने को मिलता। उन्होंने बताया कि दादाजी ने अनेक जानीमानी हस्तियों का सान्निध्य लिया और उनसे प्रेरणा और प्रभाव पाया।

कोलकाता में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के सेवादल द्वारा आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में स्वयंसेवक रहे। गांधीजी के सत्याग्रह तथा स्वदेशी आन्दोलन में सक्रिय रहे। दादाजी के साथ विदेशी वस्तुओं का त्याग कर दादीजी ने भी आजीवन खादी पहनने का व्रत लिया। बीकानेर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष रहे। विधायक, नगर पार्षद तथा अनेक संस्थाओं के संस्थापक, ट्रस्टी एवं संरक्षक सदस्य रहे।

अपने क्षेत्र के वे विकास पुरुष ही रहे। मुख्य-प्रमुख शीर्षस्थ नेताओं के साथ-साथ उनका जानेमाने धर्मगुरुओं, पत्रकारों तथा

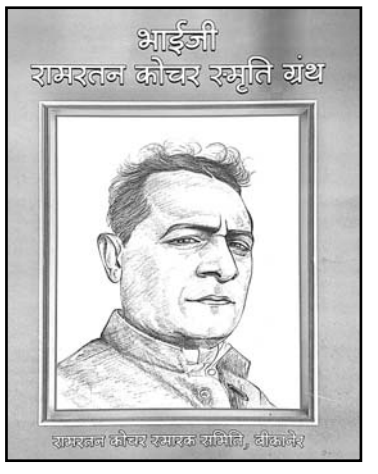

समाजसेवियों से सम्पर्क रहते जो कुछ उनसे सीखा उसका निरन्तर अपने लेखों द्वारा, सार्वजनिक भाषणों द्वारा, पत्र-पत्रिकाओं में अग्र आलेखों द्वारा जन-जागरण में शंखनाद किया।

स्मृति ग्रन्थ में जीवनवृत्त, व्यक्तित्व और कर्तृत्व, पत्रों के आलोक में, डायरी अंश, श्रद्धांजलियां, मूर्ति अनावरण, लोकसाक्ष्य, संस्मरण जैसे खण्डों में कोचरजी द्वारा लिखे गये और अन्यों द्वारा उनके साथ रहे सम्बन्धों, सम्पर्कों तथा संस्मरणों से सम्बन्धित जानकारी देकर ग्रन्थ को सर्वांग उपयोगी तथा यादगार बना दिया गया है।

दिनांक 08-11-1967 के डायरी पन्ने में 'आचार्यश्री तुलसीगणीजी' शीर्षक के अन्तर्गत कोचरजी ने लिखा- 'मुझे शास्त्रार्थ का चैलेंज दिया जाता है। मैं ज्ञान वृद्धि के लिए होने वाली चर्चा का सदा स्वागत करता हूं पर मल्लयुद्ध के रूप में होने वाले शास्त्रार्थ के लिए मैं तैयार नहीं हूं चाहे मुझे पराजित ही क्यों न मान लिया जाये।' जैन भारती पृ. 1128 ता. 29-10-1967 के इन वाक्यों से आचार्य तुलसी की महानता का प्रभाव मेरे पर पड़ा। यह पहला अवसर है ता. 07-11-1967 अहमदाबाद से सागर सदन आचार्य तुलसी का व्याख्यान-अपव्यय से बचो-आचार्यश्री तुलसी द्वारा सुना। यहीं से मुझे प्रेरणा मिली दो घंटे प्रतिदिन मौन रखने की।

(स्मृति ग्रन्थ, पृ. 228)

कला-संस्कृति मंत्री बी. डी. कल्ला ने उन्हें बहुमुखी प्रतिभा के धनी, कुशल संगठक, जनसेवी, जनप्रतिनिधि, मिलनसार, पराई पीड़ा में पड़ने वाले राजनीति के चाणक्य कहा। सातवीं में पढ़ते पहलीबार विधानसभा चुनाव को निकट से देखा।

गली-मोहल्लों में चर्चा रहती थी कि कोचरजी दो दिनों में ऐसा माहौल बना देंगे कि मूलचन्दजी का पलड़ा भारी हो जायेगा। वर्ष 1980 में मैंने विधानसभा चुनाव के लिए टिकट मांगा तो लोगों ने कहा कि यह नया चेहरा है। अनुभवी एवं पुराने नेताओं के रहते इन्हें कहां टिकट मिलेगा पर कोचरजी ने कहा कि यह नया चेहरा ही टिकट लेकर आयेगा। ऐसे अनेक संस्मरण जुड़े हैं जिनको याद कर स्मृतियां ताजा हो जाती हैं। (वही, पृ. 308)

अनेक महत्वपूर्ण चित्रों से युक्त सवा तीन सौ पृष्ठ लिए रामरतन कोचर स्मारक समिति, बीकानेर से ऋषिकुमार मिश्र के प्रधान सम्पादन में प्रकाशित इस ग्रन्थ की कीमत 500 रूपया है।

साहित्याकाश में 'कला समय' का सौ वां अंक

भोपाल से प्रकाशित त्रै-मासिक कला समय ने भंवरलाल श्रीवासजी के दृष्टिवान सम्पादन में सौ अंक का शतक बनाकर साहित्य जगत में अपने पगल्ये पाड़े हैं। यों तो इसका प्रत्येक अंक ही साहित्य के विविध सवालों पर बड़ी मुस्तैदी से अपना अग्र दायित्व वहन करता है किन्तु शोध करने वाले छात्रों एवं गतिशील विद्वानों तथा प्रबुद्ध पाठकों के लिए इसकी प्रतीक्षा बनी रहना भी एक अलग अच्छाई का मंडान करती है।

अगस्त-सितम्बर 2019 के इस अंक में जैसलमेर के रम्मती ख्यालों के प्रणेता प्रख्यात खिलाड़ी तेजकवि के वंशज नन्दकिशोर शर्मा का राजा भर्तृहरि की रम्मत के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारीपूर्ण आलेख नई जानकारियां लिए निखरा है। भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर द्वारा आयोजित लोकानुरंजन मेले में भी हमारे विशेष आग्रह पर श्री शर्मा अपना ख्याल दल लेकर आये और राजा भर्तृहरि की रम्मत प्रस्तुत कर जो विशेष छाप छोड़ी, आज भी लोग उसकी याद लिये हैं। नन्दकिशोरजी के पिता सगतमलजी भी तेजकवि की तरह सशक्त खिलाड़ी तथा ख्याल लेखक थे। नन्दकिशोरजी स्वयं भी उसी परम्परा के सशक्त खिलाड़ी हैं जिन्होंने रम्मती ख्यालों की रचना ही नहीं की, उनमें मुख्य महिला एवं पुरुष पात्र की भूमिका को बुलन्दी के साथ प्रस्तुत कर बड़ा नाम कमाया।

राजस्थान में लोकनाट्य ख्याल की अंचल विशेष के नाम से विभिन्न शैलियां प्रचलित रही हैं। उनमें मेवाड़ी, मारवाड़ी, चिड़ावी, शेखावाटी, जयपुरी, हाड़ौती शैलियों में विविध रंगतों में ख्याल करने वाले होनहार कलाकार हुए हैं। इनके अलावा पारसी शैली में भी अलग से यहां कम्पनियां थीं। इनमें न्यू अलफर्ड कम्पनी का नाम अधिक चर्चित था। इसके द्वारा भी महाराज भर्तृहरि नाटक प्रदर्शित किया जाता था।

जयपुर में गणपतलाल डांगी का बड़ा नाम था जो बाद में आकाशवाणी केन्द्र जयपुर में रहे और अपनी गायकी द्वारा बड़े ख्यात हुए। इनके पास पारसी थियेटर विषयक विपुल साज सामान तथा फोटो थे जिनको लेकर उन्होंने अपने निवास को ही पूरा संग्रहालय बना दिया था। मुझे उन्होंने बड़ी देर तक अपना वह पूरा संग्रहालय दिखाया और पारसी थियेटर के माध्यम से उन्होंने जो मण्डली चलाई उसकी पूरी जानकारी से समृद्ध किया।

डॉ. इन्द्रप्रकाश श्रीमाली ने बताया कि डांगीजी के 'सेमाड़ी री गूंज' तथा 'लड़े शूरमा' नामक सिरीयल तो इतने लोकप्रिय रहे कि रामायण सिरीयल की तरह सुनने के लिए आकाशवाणी केन्द्रों पर भी लोगों की भीड़ एकत्र हो जाती।

उदयपुर आकाशवाणी केन्द्र में रहे रामू शास्त्री वायलीन वादन के नामचीन कलाकार थे। उन्होंने बताया कि अलवर में राजर्षि अभय समाज ने 1960 के लगभग रंगकर्मी विश्वंभरदयाल शर्मा के आग्रह से छोटेलाल चाचा ने महाराजा भर्तृहरि नाटक प्रारम्भ किया।

यह नाटक कथावाचक पं. राधेश्याम के शिष्य पं. मुरारीलाल झर्झरी लिखित था। छोटेलाल न्यू अलफर्ड कम्पनी में काम कर चुके थे। पारसी शैली के इस नाटक का पहला दृश्य बाबा मत्स्येन्द्रनाथ के आश्रम का था। नाथ सम्प्रदाय के प्रथम गुरु मत्स्येन्द्र तथा गोरख की वेशभूषा दर्शकों को प्राचीन लोक की जीवन्तता से रू-ब-रू कराती। शरीर पर त्रिपुंड, काली ऊन की रस्सी से बुना कमरबंध, खुले लटकते बाल, डोर से बन्धा मोटा घुघरू नाथ परम्परा की असल छवि का दरसाव कराते।

राजसी पोशाक में रेशमी पीले, लाल, नीले, हरे, बैंगनी वस्त्र कलाबूती जरी कोर गोटे से दमकते। महारानी तथा नर्तकी की जरी की साड़ी, बनारसी दुपट्टा, मखमली अंगवस्त्र राजसी वैभव के प्रतीक, पौराणिक कल्पनाओं के सबल दस्तावेज तथा करधनी, बाजूबन्द, हथफूल, हीरामन, मोहनमाला तथा गलहार ऋग्वैदिक समय का बोध कराते।

यही नहीं, अनेक सुन्दर तथा कलात्मक पर्दों पर विविध दृश्यों का अंकन पारसी थियेटर की उदात्त कल्पना के साथ भर्तृहरि के राजदरबार को बड़ी भव्यता के साथ प्रस्तुत करते। महलों की शानशौकत को दर्शाते दरबार महल, तस्वीर महल, नर्तकी महल, झूला महल, शीश महल, रंगमहल के दृश्य सोने-चांदी तथा रत्नों के जड़ाव से लकदक सुनहरी आभा लिए सबको चकित किये रहते।

मल्ल दरबार तथा महलों में आयोजित नृत्यों में झूला, थाली, कांच, चूड़ा नामी नृत्यों को देखने का मुझे भी अवसर मिला जिसकी अब मात्र धूंधली छवि भर है। आजादी के पूर्व अपने गांव कानोड़ के गांधी चौक में कृष्ण सुदामा तथा प्रताप जैसे नाटकों में जो भारी भरकम विविध दृश्यों वाले पड़दे पारसी थियेटर का प्रभाव लिये होते उनका चित्रांकन करने वाले हमारे माड़साब नन्दलाल रांका अब भी याद आते हैं जो हारमोनियम पर नाट्य में आये गीतों की महीने भर पूर्व से रिहर्सल शुरू करवा देते।

मंचीत नाटक स्कूल संचालक पं. उदय जैन द्वारा लिखे होते। बहुत बाद में जब उनका प्रणवीर प्रताप नाटक छपा तब उसकी भूमिका उन्होंने मुझसे लिखवाकर मेरा कद कई गुणा बड़ा कर दिया था। सन् 1952 में तो आठवीं बाद मैंने गांव ही छोड़ दिया था।

जैन पाठशाला शताब्दी स्मारिका

बीकानेर की जैन पाठशाला सभा ने अपने समय के सौ वर्ष पूर्ण करने पर जो ग्रन्थ प्रकाशित किया वह शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय दस्तावेजीकरण है। यहां के ओसवाल श्रीमंतों द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में शिलालेखीय देन रही है।

जैन पाठशाला का आदर्श यह रहा कि श्री जैन पाठशाला विद्यालय से अपने पायदान बढ़ाते हुए श्री जैन पब्लिक स्कूल, श्री जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री जैन कन्या महाविद्यालय तथा श्री जैन स्नातकोत्तर महाविद्यालय तक की शिक्षण संस्थानिक प्रवृत्तियों के माध्यम से सैकड़ों छात्र देश-विदेश में विभन्न क्षेत्रा में कीर्ति-गौरव पताकाएं थामे हैं।

ग्रन्थ का प्रत्येक पृष्ठ मुंह बोलता पाठशाला का इतिहास लेखा है। अनेक चित्रों तथा पाठशाला के पग-पग प्रगति विस्तार से ग्रन्थ अन्यों के लिए भी पठनीय तथा अनुकरणीय है। इसके लिए संयोजक कन्हैयालाल बोथरा, प्रधान सम्पादन जानकीनारायण श्रीमाली तथा सम्पादक डॉ. अजय जोशी एवं प्रो. सतीश मेहता बधाई के पात्र हैं।

- म. भा.

स्मृतियों के शिखर (92) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मेवाड़ में रासधारी ख्यालों के गंगाराम

राजस्थान के दक्षिणी भूभाग मेवाड़ में लोकनाट्य की विशिष्ट विधा रासधारी ख्यालों का व्यापक क्षेत्र रहा। इसके मूल में ब्रज की रासलीला का प्राधान्य रहा। उधर के जो रासदल मेवाड़ की ओर प्रदर्शन के लिए आते रहे, उन्हीं से प्रेरणा पाकर रास करने वाले कलाकारों ने रासधारी ख्यालों का सूत्रपात किया।

रास को धारणा करने वाले अभिनेता रासधारी कहलाते थे किन्तु कालान्तर में यह नाम उस मंडली के लिए प्रयुक्त होने लगा जो रासलीला का प्रदर्शन करती थी। ये मंडलियां वल्लभ संप्रदायी वैष्णव मंदिरों से जुड़ी हुई थीं जो कृष्णलीलाओं द्वारा जनजीवन में कृष्ण-भक्ति का माधुर्य वपन करती थी।

इन लीलाओं में गाने-बजाने वाले वैरागी साधु और कुमावत थे जिनके संपर्क से मेवाड़ के कुमावत अपना माटी-बर्तन बनाने का व्यवसाय छोड़ लीला-प्रदर्शन में पखावज बजाने लग गये। ऐसे ही वैरागी साधु जुड़े जो भजन-कीर्तन में निष्णात थे। बाद में गंधर्व, ढोली, मिरासी, सरगड़े जुड़ते गए।

ये सब उस रासलीला की शास्त्र निबद्ध शैली को तो नहीं पकड़ सके किन्तु पृथक से एक ऐसी शैली बनाने में कामयाब हुए जो लोकधारा की नृत्य-गान की एक विशिष्ट शैली के रूप में अस्तित्व में आई। यही शैली रासधारी के रूप में जानी गई।

जाहिर है, इस रासधारी में उस रासलीला का वह पारंपारिक रूप नहीं रहा जिसमें ब्राह्मण एवं सवर्ण ही भाग लेते थे। मंदिर संस्कृति की वह विशुद्धता और गरिमा भी नहीं रही हालांकि मुकुट धारण करने का जिम्मा वैरागी साधुओं का ही रहा जबकि मंडली का संचालन विभिन्न जातियों के लोगों ने प्रारंभ कर दिया। जनता जनार्दन में रासधारी ख्यालों की बढ़ती लोकप्रियता के कारण कई मंडलियां अस्तित्व में आईं।

निम्बाहेड़ा के रतनपुर गांव के फकीर मुहम्मद स्वयं अच्छे खिलाड़ी थे। उनके दल में कालू और भेरा तबला-सारंगी के उस्ताद थे। ये ढोली जाति के थे जो स्वांग भी रचते थे। मारवाड़ के खोड़ गांव के पास पावा का मूला दर्जी भी अच्छा खिलाड़ी था। यहीं वघाराम व गणेशदास अच्छे खिलाड़ी हुए। मूला ने कई खिलाड़ी तैयार किए। उधर कुशला भील का भी जानामाना दल था। मेवाड़ महाराणा फतहसिंह ने भी इसका ख्याल देखा। गादोली में हीरालाल जाट, नाड़ाखेड़ा में गोकुल ब्राह्मण, कपासन में लछमण भाट की मंडलियां बड़ी प्रभावी थीं। कुरज के शंकरगिरि, मथुरागिरि नामी खिलाड़ी थे।

उदयपुर से 17 किलोमीटर दूर देबारी मुख्य सड़क से तीन किलोमीटर खेमली मार्ग पर गुड़ली गांव के गंगाराम वैरागी की रासधारी की बड़ी जानीमानी मंडली थी। रासधारी ख्याल के लिए गंगाराम इतने प्रसिद्ध हुए कि वे 'रासधारीवाले गंगाराम' के रूप में ही जाने गए।

रासधारी के अलावा वे गोपीचंद भरथरी, चंदमिलियागिरी, राजा हरिश्चन्द्र के खेल भी करते। उनकी मंडली में रहे मीठूदास वैरागी (80) ने 7 अप्रेल 2008 को गुडली में एक भेंट के दौरान बताया कि गंगाराम का निधन 1998 में हुआ जब वे 75 वर्ष के थे। वे जब 15 वर्ष के थे तब से ही ख्याल-तमाशों में भाग लेने लग गए थे। स्वयं मीठूदास को भी वे ही बम्बोरा के पास के गांव से लाये और अपनी मंडली में रखा। तब उनकी उम्र लगभग 15 वर्ष थी। गंगाराम के बाद रासधारी ख्यालों का एक तरह से समापा ही हो गया। इस दृष्टि से वे रासधारी ख्यालों की अंतिम कड़ी थे।

रासधारी में मीठूदास सीता बनते थे। पांवों में घूघरे धारण करते। सीता की पेशकश मेवाड़ी रंगत की थी। अपने बोल बोलकर फिर नाच शुरू होता। एक बार बाठरड़ा के पास रासधारी हो रही थी। उन्होंने नाचना शुरू किया तो सामने दर्शकों में बैठे एक साधु से सीता का नाचना बर्दास्त नहीं हुआ। गुस्से में आकर वह जोर से चिल्लाया कि सीतामाता डांस कर रही है। यह सरासर उस मैया का अपमान है। हम इसे बर्दास्त नहीं करेंगे। उनके यह कहने पर सारे दर्शकों में सन्नाटा छा गया। तब माहौल गर्म देखते हुए वह खेल बंद कर देना पड़ा। वह साधु हनुमान मंदिर का पुजारी था। बड़ा दबंग और प्रभावी था।

गंगाराम के परिवार में उनका पुत्र मांगीलाल हनुमान बनता था लेकिन 1970 में गुड़ली के ही चारभुजा मंदिर के पास हो रहे रासधारी ख्याल में रस्सी के बल खिसकते वह गिर पड़ा जिससे उसका निधन हो गया। यह दिन नवरात्रा के सोमवार का था। तब मांगीलाल 15-16 वर्ष का था। यह घटना रात्रि को लगभग 11 बजे घटी। तब लगभग चार हजार दर्शकों की अपार भीड़ थी।

रस्सी मंदिर के ध्वजदंड से बंधी थी। बैलेंस बिगड जाने से मांगीलाल मंदिर में चारभुजा की प्रतिमा के समक्ष आ गिरा। कहते हैं उसी चारभुजा मंदिर के पास की पहाड़ी पर कालकामाता मंदिर के भोपे को भाव आये। उसने वहां के एक जातरी को तत्काल भेजा कि हनुमान बने मांगीलाल को रस्सी के बल उतरने से रोका जाय किन्तु जातरी वहां पहुंचा उससे पूर्व ही यह दु:खद घटना घट चुकी थी।

गुड़ली के लोगों पर इस घटना का बड़ा गहरा असर पड़ा फलस्वरूप मांगीलाल की स्मृति में चारभुजा मंदिर के पास ही हनुमान मंदिर बनवाया गया। मांगीलाल के बड़े पुत्र सुरेशदास ने राम तथा छोटे पुत्र गणेशदास ने भी रासधारी में लक्ष्मण की भूमिका निभाई। वर्तमान में सुरेश मुम्बई में है जबकि गणेश गुड़ली में ही चारभुजा मंदिर की सेवा-पूजा करता है।

गंगाराम ने अपनी मंडली द्वारा मेवाड़ के सभी कस्बों तथा छोटे-छोटे गांवों में रासधारी तथा अन्य ख्याल प्रदर्शित किये। उदयपुर, दरोली, डूंगला, खेरोदा, कानोड़, बाठेड़ा, भीण्डर, बोहेड़ा, बानसी, बड़ीसादड़ी तथा आसपास के गांवों में उनकी मंडली ने अच्छे रसिकजन पैदा किये। गंगाराम हारमोनियम बजाने से लेकर सभी तरह के अभिनय करते थे। वे रावण भी बने। यों बाबूलाल उनका अच्छा रौबीला कलाकार था जो रावण बनता था।

हनुमान का अभिनय करने वाला मुख्य अभिनेता इन्द्रसिंह ब्रह्मचारी था। वह वर्तमान में गढ़ी प्रतापगढ़ में रहता है। उदयपुर में भड़भुजाघाटी पर कई बार रासधारी ख्याल हुए। तब मोड़ी का राधू अच्छा तबला वादक था। शीशवी का मोतीलाल हारमोनियम बजाता था।

घाणेराव का शोभालाल तथा हजारी भी अच्छे कलाकार थे जो बाद में लोककला मंडल में देवीलाल सामर के पास भी रहे। गुड़ली का अलानूर जनाना बनता। राशमी के पास सिरोड़ी का प्रभुदास सीता बनता। कुटकड़ाई करने में प्रेमसिंह अधिक होशियार था। मजाकिया के रूप में मावली का मगनीराम ढोली उस्ताद था। नाड़ाखेड़ा का देवीलाल गाने बजाने का काम करता था।

मीठूदास ने बताया कि आज की तुलना में हमारे दल की क्या बात करें। एक चस्का था, जुनून था तो हम लोग भटकते रहते थे। कहीं भी, किसी गांव में चले जाते बिना बुलाये ही। वहां जाकर गाना-बजाना शुरू कर देते जिससे लोग एकत्र हो जाते। बात पूरे गांव में फैलती तब मोतबीर लोगों से हमारा मिलना होता और ख्याल प्रदर्शन की बात होती।

एक गांव में एक या दो रात ख्याल होता पर जो भी दिखाया जाता उसे लोग भूलते नहीं। तब मनोरंजन का और कोई साधन नहीं था। चित्तौड़ तक हमारी मंडली ने तमाशे किये हैं। एक बार तो कोटा के दशहरे मेले में भी हमारा प्रदर्शन हुआ। गंगाराम की मंडली मेवाड़ी रासधारी ख्यालों की अंतिम मंडली थी। गंगारामजी की मृत्यु के बाद उनकी मंडली का सामान देबारी का गंगाराम ले गया। कहा जाता है कि उसने भी कुछ दिनों तक मंडली चलाई पर उसमें सफलता नहीं मिली।

सन् 1960 से 1964 के दौरान मेवाड़ के कई गांवों की यात्राकर मैं कई कलाकारों से मिला और मेवाड़ी ख्यालों की विभिन्न रंगतों तथा ख्याल प्रदर्शनों की जानकारी लेता रहा। इस दौरान मैंने कई ख्याल पुस्तकें भी एकत्र की जो उन खिलाड़ियों की लिखी हुई हैं जिनकी स्वयं की अच्छी मंडलियां थीं। वे अच्छे कलाकार थे और ख्यालों में मुख्यपात्रों की भूमिका निभाते थे। कुछ हस्तलिखित ख्यालों के गुटके भी मेरे देखने में आये। ऐसा ही एक गुटका देवीलाल उस्ताद लिखित ख्यालों का मिला। यह गुटका मेवाड़ी ख्यालों का था। इसमें उदयपुर से संबंधित मीठु हरिजन नामक ख्याल भी था।

रासधारी ख्याल को ठीक से ख्याल रूप में प्रदर्शित करने वाले मेवाड़ के वाना-बरोड़िया का मोतीलाल था जिसने रामलीला, चंद्रावल लीला, हरिश्चंद्र लीला आदि ख्यालों की रचना की। यह बड़े मजे की बात है कि रासधारी ख्याल के नायक भारतीय लोक मनीषा के आदर्श राम हैं और उनका कथा-रूप तुलसीदास द्वारा विवेचित रामचरित मानस का आधार लिए है किन्तु तुलसीदास रचित एक भी छंद इसमें प्रयुक्त हुआ नहीं मिलता बावजूद इसके रचनाकार के रूप में तुलसीदास के नाम की छाप कई जगह देखने को मिलती है जबकि ख्याल की भाषा ठेठ मेवाड़ी है और जिन छंदों में, लोकछंदों में, यह ख्याल निबद्ध है उससे तुलसीदास का कोई लेना-देना नहीं है।

भारतीय लोककला मंडल उदयपुर के संचालक देवीलाल सामर एक सधे हुए कलाकार थे। उन्होंने कलामंडल में कलाकारों का अच्छा दल तैयार कर रासधारी के इस पारंपरिक रूपांकन को नया रूप देकर नई रासधारी नृत्य नाटिका की रचना की जिसके अनेक प्रदर्शन देश के विभिन्न भागों में दिये गए। इसमें सामरजी स्वयं राम की उदात्त भूमिका निभाते थे। उन्होंने ख्यालों के प्रयोगधर्मी रूप में न केवल परंपराशील ख्यालों को प्रदर्शन योग्य बनाया अपितु परंपराशील ख्यालों की चाल-ढाल में नये ख्यालों की रचना कर उनकी भी प्रभावपूर्ण प्रस्तुति दी। लक्ष्मीनारायण राव ने रासधारी को रंगत दी और कलाकार तोलाराम ने लक्ष्मण की भूमिका।

यह ख्याल सामरजी द्वारा सन् 1953 से 1955 तक मंचित होता रहा। लक्ष्मीनारायण ने बताया कि कला मंडल का रासधारी राम वन गमन से लेकर सीता हरण तक मंचित होता। गंगाराम के दल में भी राव रहे। वहां ये वादन के साथ-साथ मंचन का भी काम करते। सामरजी के साथ इन्होंने रासधारी में संत रावण का अभिनय किया। तोलाराम ने समय-समय पर सीता की भूमिका भी की। रासधारी में राम-लक्ष्मण मेवाड़ी पगड़ी और ऊपर छोगा (तुर्रा) भी लगाते। गंगाराम की रासधारी में प्रथम बार राम-लक्ष्मण-सीता की झांकी लाते समय उनकी कटि के नीचे तक साड़ी फैली रहती जिसके दोनों छोर दो कलाकार पकड़े रहते। यह झांकी मंच के तीनों ओर बैठे दर्शकों का घूम-फिरकर अभिवादन करती।

संक्षेप में यदि कहा जाय तो मेवाड़ी ख्याल अपनी कोमलता के लिए प्रसिद्ध हैं। वेशभूषा की रंगीनियां तथा कलात्मकता भी इन ख्यालों की आकर्षण रही है। मेवाड़ी आंटेदार पगड़ियों पर चमकते सरपेच, झिलमिलाती पछेवड़ियां, तेज और ओजस्विता के प्रतीक तुर्रा कलंगी, लम्बा कौर किनारीदार झग्गा, झग्गों पर लगा कमरबंधा और कमरबंधे पर पड़ा परतला, घेरदार घेरघुमेर घाघरे, लहरदार छलकती इठलाती साड़ियां और उन पर बंधे ताज, भुजा पर बाजूबंद, गले में तमण्या, कान में झेला, कमर में कंदोरा, सिर पर रखड़ी आदि खनकते आभूषण इन ख्यालों में एक नई ताजगी, तन्मयता और तत्परता को जन्म देते। दर्शक तन्मय हो ख्यालों का सवाया रंग लूटते और रसलीन हो आनंद में सरोबोर हो जाते। यहां के अभिनय और नृत्य में भी एक विशेष प्रकार का अपनापन रहता।

-शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, शनिवार 01 फरवरी 2020

सम्पादकीय

गण गन्ना तंत्र तीखा हो

भारतीय गणतंत्र की कई खूबियां हैं। यहां का संविधान भी सहिष्णु है मगर राजनैतिक दल उतने बहते पानी निर्मला नहीं हैं। शुरू-शुरू में देशप्रेम, देशभक्ति, देश सर्वोपरि की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी। समष्टि की समझ का सौहार्द था। धीरे-धीरे दल मुख्य धुरी हो गये। उनका अस्तित्व प्रमुख हो गया। उसके बाद इस धारणा ने भी अपना पैंतरा बदला और दल गौण होकर दल-नायक प्रमुखता पाने लगा। दल की आड़ रही। दल का नाम रहा पर पहचान नायक की प्रबल बनी।

भारत की छवि धर्म और अध्यात्म की भूमि के रूप में भी रही है। सम्पन्न व्यक्ति कुबेर का कोश त्याग संत-संन्यासी बन जाते। राजकाज में भी उनकी पूरी दखल रहती। अत्याचारी शासक तक को वे सत्ता च्युत कर नया गद्दी नसीन कर देते। ऋषि-मुनियों के आश्रम में राजकुमार पलते। उनकी वाणी फलित होती। श्राप चलते। संत-संन्यासी बनने की परम्परा आज भी है। अच्छे आदर्श राजाओं की अमरता आज भी जनजीवन में व्याप्त है।

समय बड़ा बलवान कहा गया है। वह आजादी की पूरी छूट देता है। व्यक्ति अच्छा बने। वह अच्छा बनेगा तो समाज अच्छा बनेगा। समाज अच्छा होगा तो देश किंवा राष्ट्र अच्छा होगा। अच्छाई छिपकर नहीं रह सकती। जंगल में खिला फूल भी अपनी खुशबू फैलाता है। जगद्गुरु के रूप में भारत की पहचान सर्वविदित है।

रेंज रोवर इवोक की पेशकश

उदयपुर। जगुआर लैंड रोवर इंडिया ने न्यू जनरेशन रेंज रोवर इवोक के लॉन्च की घोषणा की। विशेष निर्देश वाले एस और स्पोर्टियर आर-डायनैमिक एसई डेरिवेटिव्ज़ में उपलब्ध नई रेंज रोवर इवोक 48 वोल्ट माइल्ड हायब्रिड सिस्टम के साथ बीएस-6 कॉम्लोट एंट 132 केडब्लूक इंजीनियम टर्बोचार्ज्ड डीज़ल पॉवरट्रेन और 184 केडब्लूक इंजीनियम टर्बोचार्ज्ड पेट्रोल पॉवरट्रेन के विकल्प के साथ पेश की जा रही है। जगुआर लैंड रोवर इंडिया लि. के प्रेसिडेंट और मैनेजिंग डायरेक्टर रोहित सूरी ने कहा कि अपनी कैटेगरी में रेंज रोवर इवोक हमेशा से सबसे स्टाइलिश और सबसे अलग और कॉम्पैक्ट एसयूवी रही है। इसी विरासत को आगे बढ़ाते हुए नई रेंज रोवर इवोक को डिज़ाइन और टेक्नोलॉजी में और बेहतर बनाया गया है।

टैफे द्वारा फोटो और वीडियो स्टोरी प्रतियोगिता शुरू

उदयपुर। टैफे-टैक्टर्स एंड फार्म इक्विपमेंट लि. संख्या के आधार पर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी ट्रैक्टर निर्माता कंपनी ने अपनी बी अ # फार्मदोस्त पहल के तहत कृषक समुदाय को समर्पित, '100 Farmers. 100 Stories' एक राष्ट्रव्यापी फ़ोटो और वीडियो प्रतियोगिता शुरू की है। इस अनोखी प्रतियोगिता का उद्देश्य संपूर्ण भारत से सर्वोच्च 100 प्रेरणात्मक कहानियों को एकत्र करना है और अदृश्य कृषक समुदाय तथा कृषि के पेशे पर लोगों का ध्यान केंद्रित करना है। इस प्रतियोगिता में दो प्रमुख श्रेणियां हैं-फ़ोटो स्टोरिज़ और वीडियो स्टोरिज़, और इन श्रेणियों के विजेताओं की पुरस्कार राशि 2,20,000 रूपये होगी। इसके अलावा विजेता प्रविष्टियों में दर्शाए चुनिंदा किसानों को भी पुरस्कृत किया जाएगा। प्रतियोगिता में 13 से अधिक वर्ष की आयु के सभी भारतीय, बिना किसी प्रवेश शुल्क के भाग ले सकते हैं। प्रतियोगिता 29 फ़रवरी तक चालू है। प्रतियोगिता के ज्यूरी सदस्यों में वरिष्ठ हस्तियाँ और अनुभवी विशेषज्ञ शामिल हैं।

सबसे छोटी बाइंडिंग बुक कलेक्शन पर चित्तौड़ा सम्मानित

उदयपुर। लेकसिटी के चंद्रप्रकाश चित्तौड़ा को विश्व की सबसे छोटी 751 बाइण्डिंग डायरी बुक के संग्रह पर रॉयल सक्सेस इंटरनेशनल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज होने का सम्मान मिला। उल्लेखनीय है कि चित्तौड़ा द्वारा संग्रह में विश्व की सबसे छोटी बाइंडिंग बुक में देश-विदेश के महापुरुषों के अलावा कलाकारों का भी जीवन परिचय लिख हुआ है। इनमें पूर्व राष्ट्रपति डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम, पूर्व उपराष्ट्रपति भैरोसिंह शेखावत, हनुमान चालीसा व सबसे छोटी मात्र 0.02 मिलीमीटर व 42 पेज की डायरी प्रमुख है। चित्तौड़ा की इस महत्वपूर्ण उपलब्धि पर रॉयल एक्सेस इंटरनेशनल बुक के भारतीय कार्यालय हैदराबाद तेलंगाना से फाउण्डर चैयरमेन जेवी ने प्रमाण पत्र और मेडल प्रेषित कर उन्हें सम्मानित किया।

जार द्वारा पत्रकारों को हेलमेट वितरित

पत्रकार हरावल की तरह आगे रहकर समाज को जागरूक करें : प्रकाशसिंह राठौड़

उदयपुर। जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) द्वारा प्रोम्पट इंफ्राकोम के सहयोग से 21 जनवरी को आरटीओ कार्यालय में पत्रकार बंधुओं के हितार्थ सड़क सुरक्षा के मद्देनजर हेलमेट वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रादेशिक परिवहन अधिकारी प्रकाशसिंह राठौड़, विशिष्ट अतिथि डीवायएसपी यातायात नैत्रपालसिंह, प्रोम्पट इंफ्राकोम के सीईओ सैयद तबरेज अली एवं जार अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत थे।

इस अवसर पर प्रकाशसिंह राठौड़ ने कहा कि जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) ने इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में आमंत्रित किया यह सौभाग्य की बात है। हेलमेट वितरण का कार्यक्रम साधारण कार्यक्रम नहीं है। इसका प्रभाव समाज के हर तबके पर पड़ता है। उन्होंने कहा कि देश में हेलमेट नहीं पहनने पर सालाना डेढ़ लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। राजस्थान में ही प्रतिदिन 30 लोगों की हेलमेट नहीं होने के कारण मृत्यु हो जाती है। उन्होंने कहा कि पुराने जमाने में अपने-अपने राज्यों के हरावल हुआ करते थे। वे राष्ट्र की सेवा के लिए हमेशा तत्पर रहते थे। पत्रकारों को भी ऐसा ही हरावल बनकर गांवों में हेलमेट लगाने का जागरूकता कार्यक्रम करने चाहियें जिससे वहां के लोगों में भी जागरूकता आए।

नैत्रपालसिंह ने कहा कि मीडियाकर्मी ज्यादातर समय दुपहिया वाहन पर रहते हैं। इस हेतु उन्हें हेलमेट की अधिक आवश्यकता है। हेलमेट सिर की रक्षा के साथ ही सर्दी, गर्मी, बरसात में बचाव के साथ भी करता है। हेलमेट वितरण का कार्य सराहनीय है जिसके लिए जार के पदाधिकारी बधाई के पात्र हैं। सैयद तबरेज अली ने कहा कि हेलमेट की मुहिम को आगे बढ़ाए ताकि अधिक से अधिक लोगों को जागरूक किया जा सके।

प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत करते हुए जार अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत ने कहा कि जार समय-समय पर पत्रकारों के हितार्थ कई कार्यक्रम आयोजित करता रहता है। पूर्व में सभी सदस्यों का एक्सीडेंटल बीमा, स्वास्थ्य सभी जांचें निशुल्क, सामाजिक सरोकारों से जुड़े विविध कार्यक्रम कर चुका है। इनके अलावा पिछले वर्षों में जार की ओर से 'जरोदय' नाम से दो महत्वपूर्ण स्मारिकाओं का प्रकाशन भी हुआ है। इसी कड़ी में लगभग 80 जार सदस्यों को सड़क सुरक्षा के तहत हेलमेट वितरण किया गया। आभार जार महासचिव अजयकुमार आचार्य ने दिया जबकि संचालन अल्पेश लोढ़ा ने किया।

उदयपुर मीडिया अवार्ड का रंगारंग आयोजन

उदयपुर। उदयपुर के भैरव बाग में मीडिया अवार्ड 2020 का रंगारंग आयोजन किया गया। समारोह के प्रायोजक अर्थ डायग्नोस्टिक, प्रोम्पट इंफ्राकोम, आरबीएस फाउंडेशन, जेएसजी लेकसिटी युवा फोरम तथा जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर थे। समारोह के विशिष्ट अतिथि राजस्थान पत्रिका के स्थानीय संपादक संदीप पुरोहित ने कहा कि यह शहर बहुत ही खूबसूरत और अपने अंदाज में अनूठा शहर है। यहां पत्रकारों में आपसी समन्वय तथा वह आपाधापी और खींचतान नहीं है जो सब कहीं देखने को मिलती हैं।

उन्होंने कहा कि शहर के विकास के साथ यहां के लोग उसके हेरीटेज पर भी ध्यान दें। बड़े-बड़े पोल देखने कोई नहीं आने वाला है। पीछोला, फतहसागर और छोटी-छोटी तंग गलियों को देखने आयेंगे। आप कितनी भी खूबसूरत कॉलोनियां बना लें, उन्हें देखने कोई नहीं आयेगा। जयपुर में छोटी चौपड़, बड़ी चौपड़ ही देखने को आते हैं। जयपुर बाद में बसा पर वह हेरीटेज सिटी है जबकि उदयपुर हेरीटेज सिटी नहीं है। क्या जयपुर में उदयपुर जैसा एकलिंगजी का मंदिर है, जगदीश जैसा मंदिर है। मैं उदयपुर नहीं आता तो गलती करता। हम सब एक संकल्प के तौर पर निश्चय करलें कि हम इसे हेरीटेज सिटी के रूप में डिक्लेयर करवायेंगे।

मुख्य अर्थ डायग्नोस्टिक के निदेशक डॉ. अरविन्दर सिंह ने कहा कि मीडिया की एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है कि वह सफेद के ऊपर जो काले अक्षर के रूप में किसी खबर या घटना का विश्लेषण करता है, लोग उसे बड़ी जिम्मेदारी और विश्वासपूर्वक ग्रहण करते हैं। प्रोम्पट इंफ्राकोम के सैयद तबरेज अली ने सभी का स्वागत करते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा पर प्रकाश डाला। संयोजक अल्पेश लोढ़ा ने मीडिया अवार्ड के द्वितीय संस्करण की विधिवत घोषणा की।

समारोह में विष्णु शर्मा 'हितेषी', शैलेश व्यास, प्रदीप मोगरा, प्रकाश शर्मा और कमलेश शर्मा को विशिष्ठ मीडिया अवार्ड प्रदान किया गया। मीडिया अवार्ड मुकेश हिंगड़, डॉ. रवि शर्मा, पवन खाब्या, भूपेश दाधीच, कैलाश सांखला, मनु राव, कपिल श्रीमाली, भुवनेश पंड्या, डॉ. सुधा कावाड़िया, प्रमोद सोनी, आनंद शर्मा, श्यामसुंदर शर्मा, ताराचंद गवारिया, अब्दुल लतीफ़, मधुलिका सिंह, लकी जैन, अविनाश जगनावत, अब्बास रिज़वी, जयश्री नागदा, छोगालाल भोई, पुष्पेंद्र सोलंकी, प्रमोद श्रीवास्तव, जोधाराम देवासी, अनिल जैन, आमिर शेख़, फलक सिरोया, राजेन्द्र हीलोरिया को प्रदान किया। विज्ञापन एजेंसी एवं कॉर्पोरेट अवार्ड संदीप खमेसरा, हर्षमित्र सरूपरिया, हीरालाल-कैलाश रावत, शिव-दीपक रावत, ललित मेहता, राजीव मुरडिया, प्रकाश पालीवाल, बी एन हरलालका, गौरव कटारिया, हितेश जोशी, मुकेश मुंदड़ा को प्रदान किया। हिंदुस्तान जिंक लि. टीम को बेस्ट कोर्पोरेट कम्यूनिकेशन का अवार्ड दिया गया। एफएम के क्षेत्र में बिग एफएम एवं रेडियो सिटी को मीडिया अवार्ड से नवाजा गया जबकि आरजे अंशुमन को बेस्ट आरजे का अवार्ड प्रदान किया गया।

इस अवसर पर संदीप पुरोहित, डॉ. अरविन्दर सिंह, सैयद तबरेज अली, जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ राजस्थान (जार) उदयपुर के अध्यक्ष डॉ. तुक्तक भानावत, आरबीएस फाउंडेशन के सुरेश शर्मा, जेएसजी लेकसिटी युवा फोरम के अध्यक्ष शुभम गांधी ने माला, उपरणा, सम्मान पत्र, स्मृति चिन्ह प्रदान कर अवार्डीज को सम्मानित किया।

धूमधाम से मनाया राष्ट्रीय पर्व

गांधी ग्राउंड

नारायण सेवा संस्थान

राजस्थान विद्यापीठ

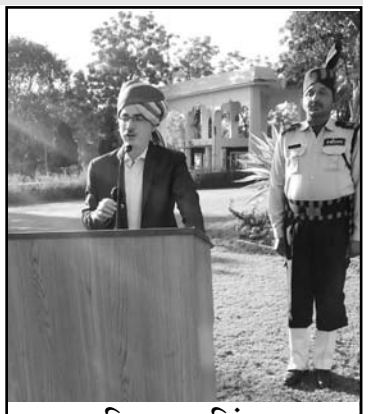
हिन्दुस्तान ज़िंक

उदयपुर। संभाग मुख्यालय में संभागीय आयुक्त विकास एस. भाले ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। पुलिस, एनसीसी, स्काउट, गाइड व पुलिस बैण्ड की टुकड़ियों ने मार्च पास्ट कर सलामी दी। मूक-बधिर विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने व्यायाम तथा हैरतंगेज प्रदर्शन किया। सरकार की विभिन्न योजनाओं एवं विकासपरक झांकियों का प्रदर्शन किया गया। पुलिस निरीक्षक राकेश कुमार के नेतृत्व 18 विभिन्न टुकडियों ने परेड में भाग लिया।

जिला स्तरीय समारोह में सम्मानित होते यूनीवार्ता के रामसिंह चंदाणा तथा उदयपुर न्यूज चैनल के प्रदीपसिंह भाटी

नारायण सेवा संस्थान में संस्थापक पद्श्री कैलाश 'मानव' ने तथा सेवा महातीर्थ बड़ी में अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने ध्वजारोहरण किया। निदेशक वन्दना अग्रवाल को सम्भाग स्तर पर सम्मान मिलने पर अभिनन्दन किया गया। **जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डिम्ड टू बी विश्वविद्यालय** में कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने झण्डारोहण कर बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत मिशन पर आमजन को जागरूक करने पर बल दिया। **हिन्दुस्तान ज़िंक** के प्रधान कार्यालय प्रांगण में हेड-इनडायरेक्ट टेक्सेशन मुकुल अग्रवाल ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया और ज़िंक की विश्व में नेतृत्व की स्थिति को बरकरार रखने के लिए प्रयास करते रहने पर बल दिया। **गीतांजली यूनिवर्सिटी** में चेयरमैन जे.पी. अग्रवाल, वाईस चेयरमैन कपिल अग्रवाल, एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर अंकित अग्रवाल, वाईस चांसलर डॉ. आर.के. नाहर तथा डीन डॉ. एफ. एस. मेहता ने ध्वजारोहण किया। कार्यक्रम में 10 वर्ष से सेवाएं दे रहें चिकित्सकों को सम्मानित किया गया।

गीतांजली यूनिवर्सिटी

निसान स्टाइलिश एसयूवी लॉन्च करेगी

उदयपुर। निसान मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड के सिद्धांत पर अपनी पहली मेड फॉर इंडिया कॉम्पैक्ट एसयूवी लॉन्च करेगी।

निसान की वैश्विक एसयूवी विरासत और उन्नत तकनीक पर आधारित नई कॉम्पैक्ट एसयूवी को भविष्य की यात्रा के हिसाब से स्टाइलिश डिजाइन के साथ सुविधा संपन्न प्रीमियम पेशकश के रूप में बनाया गया है जिससे यह गाड़ी सड़क पर अपनी मजबूत और सक्रिय उपस्थिति दर्ज़ कराए। निसान की नई एसयूवी में निसान इंटेलिजेंट मोबिलिटी के एक हिस्से के रूप में बिल्कुल नई तकनीक का इस्तेमाल हुआ है। यह एसयूवी कंपनी के इस दृष्टिकोण को दर्शाती है कि वाहनों को कैसे संचालित और समाज के साथ एकीकृत किया जाता है।

संगीत संध्या का आयोजन

उदयपुर। आगामी वेदांता उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल से पहले, सहर इंडिया ने गणतंत्र दिवस के दौरान शहर में संगीत संध्या का आयोजन किया। इस शाम में वेस्टर्न म्यूजिकल ग्रुप द्वारा लाइव प्रदर्शन प्रस्तुत किया। इसके प्रमुख कलाकार वसीम खान ने अपने दो बैंड सदस्यों शाहरुख और आमिर के साथ शानदार प्रदर्शन से दर्शकों का मनोरंजन किया।

वाराणसी में राष्ट्रीय सृजन संदर्भ

वाराणसी में प्रख्यात साहित्यकार विद्यानिवास मिश्र तथा उनकी पत्नी राधादेवी की स्मृति में स्थापित विद्याश्री न्यास द्वारा 12-14 जनवरी को आयोजित संगोष्ठी एवं लेखक शिविर में शताधिक विद्वानों की सक्रिय भागीदारी ने गांधी और हिन्दी सृजन संदर्भ को लेकर गहन वैचारिक मंथन किया। सचिव दयानिधि मिश्र के अनुसार विभिन्न सत्रों में भाषा का प्रश्न, हिन्दी पत्रकारिता और गांधी, हिन्दी कविता और गांधी, हिन्दी कथा साहित्य और गांधी, हिन्दी कथेतर गद्य और गांधी आदि विषयों पर चितन-मनन का वैदुष्यपूर्ण उत्कर्ष रहा। इस दौरान प्रदर्शनी, चित्र वीथि के साथ गांधी और हिन्दी सृजन संदर्भ, संस्कृति की सत्ता पुस्तकों का लोकार्पण हुआ। डॉ. राजकुमारसिंह को राधिकादेवी लोककला सम्मान प्रदान किया गया।

साहित्य मंडल का समारोह सम्पन्न

साहित्य मण्डल श्रीनाथद्वारा ने भगवतीप्रसाद देवपुरा की स्मृति में समारोह आयोजित किया। देवपुराजी के कृतित्व व व्यक्तित्व पर विभिन्न विद्वानों ने पत्रवाचन, वैचारिक अवदान तथा काव्य शक्ति द्वारा श्रद्धाभिव्यक्त

की। समारोह में नारनोल के डॉ. रामनिवास 'मानव', भरतपुर के डॉ. कृष्णचंद गोस्वामी, दिल्ली के लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, खंडवा के डॉ. श्रीराम परिहार, तिरूवनंतपुरम की डॉ. सी. जे. प्रसन्नकुमारी, डॉ. वी. वी. विश्वम एवं डॉ. सुमा एस., चैन्नई से श्रावणी भट्टाचार्य एवं डॉ. ए. फातिमा, मिजोरम के प्रो. सुशीलकुमार शर्मा एवं डॉ. शशिबाला शर्मा, शिमला से डॉ. तुलसीरमण तथा श्रीनाथद्वारा से राजेश्वर त्रिपाठी को सम्मानित किया गया।

इस अवसर पर त्रैमासिक हरसिंगार के अनुभूत्यांक एवं बाल साहित्य विशेषांक का लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि डॉ. सी. पी. जोशी ने बच्चों के मनोनुरूप साहित्य सृजन की आवश्यकता पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि पंडित मदनमोहन शर्मा 'अविचल' तथा अध्यक्ष देवकी काका थे। प्रधानमंत्री श्याम देवपुरा ने बताया कि समारोह में बाल साहित्यकारों को विविध उपाधि-सम्मान से नवाजा गया।

गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

राजसमंद एफसी बॉयज और यूपीएस लवाना (गर्ल्स) चैंपियन

उदयपुर / राजसमंद। जिंक फुटबॉल यूथ टूर्नामेंट के पहले संस्करण का आयोजन 22 जनवरी को कांकरोली के बालकृष्ण मैदान

में हुआ। इसमें राजसमंद एफसी बॉयज और यूपीएस लवाना (गर्ल्स) की टीम ने फाइनल में जीत हांसिल की। ज़िंक फुटबॉल यूथ टूर्नामेंट, राजस्थान फुटबॉल एसोसिएशन के साथ हिंदुस्तान जिंक की एक पहल है। इसमें राजसमंद की कुल 16 टीमों के 200 से अधिक युवा और उत्साही फुटबॉल प्रतिभाओं ने भाग लिया। समारोह में पुलिस अधीक्षक भूवन भूषण यादव, अतिरिक्त जिला कलेक्टर राकेश कुमार, उपखण्ड अधिकारी सुशील कुमार, जिला फुटबॉल संघ अध्यक्ष घनश्याम, सचिव मनोज हाड़ा, जिला खेल अधिकारी चांदखान पठान एवं हिंदुस्तान जिंक के हेड एडमिन राजेश यादव, हेड सीएसआर अभय गौतम उपस्थित थे।

टूर्नामेंट में राजसमंद एफसी और यूपीएस लवाना ने बालक और बालिका वर्ग में क्रमश: जुलाई में आयोजित होने वाले जावर स्टेडियम स्टेट चैम्पियनशिप के लिए क्वालीफाई करते हुए खिताब जीता। राजसमंद एफसी ने ऑरेंज काउंटी स्कूल को 2-0 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया। टूर्नामेंट में नील और विशाल ने सबसे ज्यादा 5 गोल किए। बालिका वर्ग के फाइनल में, यूपीएस लवाना ने स्टार क्लब को 3-0 से हराया। यूपीएस लवाना की भुवना, लक्ष्मी और संजना ने एक-एक गोल किया।

हिंदुस्तान जिंक के मुख्य कार्यकारी अधिकारी सुनील दुग्गल ने कहा कि मैं बहुत खुश हूं कि बच्चों को अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए एक प्लेटफार्म मिल गया है और इनमें से श्रेष्ठ चुनकर आगे जाएगा। हम आने वाले समय में अधिक से अधिक बच्चों को उनकी श्रेष्ठ प्रतिभा के साथ आगे लाना चाहते हैं।

राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीपसिंह शेखावत ने कहा कि जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट राजस्थान में फुटबाल की दिशा में एक मील का पत्थर है। हम इस बड़ी पहल के लिए हिंदुस्तान जिंक से जुड़कर खुश हैं। मैं विजेताओं को बधाई देना चाहता हूं और उनसे यह कहना चाहता हूं कि वे राज्य स्तरीय टूर्नामेंट के लिए शानदार तैयारी करें।

जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का मकसद राज्य में फुटबाल की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को तलाशना और उन्हें प्रोमोट करना है। जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का पहला संस्करण छह महीने तक चलेगा जिसमें राज्य के 33 जिलों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसके लिए 500 से अधिक स्कूलों की टीमें बनेंगी और 15 साल की कम उम्र के 5000 से अधिक लड़के और लड़कियों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का मौका मिलेगा।

उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल 7 से

उदयपुर। भारत के सबसे बड़े संगीत महोत्सव में से एक उदयपुर वर्ल्ड म्यूजिक फेस्टिवल का आयोजन 7 से 9 फरवरी तक किया जाएगा। फेस्टिवल के पांचवें संस्करण में फ्रांस, स्विट्जरलैंड, कुर्दिस्तान, ईरान, लेबनान, पुर्तगाल और भारत समेत 13 देशों के 150 से अधिक संगीतज्ञ और कलाकार अपना जादू बिखेरेंगे। यह समारोह कला प्रदर्शन के लिहाज से भारत में आकर्षण का एक प्रमुख केन्द्र है। हर साल 50,000 से अधिक लोग इसे देखने आते हैं।

इस संगीत महोत्सव में संगीतकारों द्वारा मंच से सीधे प्रस्तुति देखना दर्शकों को एक बेतरीन अनुभव प्रदान करता है। साथ ही यह विविधता में एकता की बेहतरीन सांस्कृतिक मिसाल भी है। पांचवें संस्करण का विषय है 'वी आर द वर्ल्ड - यूनिटी इन डाइवर्सिटी'। योजनाबद्ध प्रदर्शन और कलाकारों से बातचीत के अवसर के साथ इस समारोह में जो सांस्कृतिक झलक देखने को मिलती है वह अपनेआप में विविधता में एकता का एक वैश्विक अनुभव प्रदान करता है। इस समारोह में तीन केन्द्र बनाए गए हैं जहां रागों के हिसाब से सुबह से लेकर शाम तक अलग-अलग प्रस्तुति देखने को मिलेगी। इस विविधतापूर्ण संगीत में सुबह के ध्यानपूर्ण राग से लेकर दोपहर के समय झील के बगल में गूंजने वाली

साकार रूमानी संगीत प्रस्तुतियों तक, दिनभर की तमाम मनोदशाएं सम्मिलित होती हैं। सांध्यकालीन मंच जोशीले युवा संगीत से भरपूर होता है जो सभी उम्र के लोगों को एक साथ ले आता है यह इसे बेहद खास बना देती है। इसके अलावा यह महोत्सव स्थानीय राजस्थानी प्रतिभाओं को अपना हूनर दिखाने का अवसर भी देता है।

मार्च 2019 में इस समारोह का प्रसारण सीएएन ट्रैवल ट्रेंड्स पर हुआ जिसे 200 से अधिक देशों के 35.4 करोड़ लोगों ने देखा जिसमें इसे दुनिया के सबसे बड़े संगीत समारोह में से एक बताया गया है। इस बार फेस्टिवल में भारत के गिन्नी माही, सुधा रघुरामन, ह्वेन चाय मिट टोस्ट, मामी खान, थाइकुदम ब्रिज, रवि जोशी, अंकुर तिवारी और घलत परिवार के अलावा माली के हबीब कोयटे, फ्रांस के नो जैज सहित स्पेन और स्विट्जरलैंड की कई नामचीन हस्तियां शामिल होंगी।

सहर इंडिया के संस्थापक निदेशक संजीव भार्गव ने कहा कि यह साल का वह वक्त होता है जब दुनिया भर से संगीत भारतीय धरती पर कदम रखता है जिसमें संस्कृति, परंपरा, भाषा और विचार के बेजोड़ संगम का नमूना देखने को मिलता है। हमने इस पांचवें संस्करण में इस बात का खास ध्यान रखा है कि इस बार संगीत प्रेमियों को हर तरह के संगीत का लुत्फ उठाने का मौका मिले।

यह महोत्सव स्थानीय कलाकारों को अपनी प्रतिभा दिखाने का एक मंच और अवसर भी प्रदान करता है। पिछले कुछ सालों में इस समारोह को काफी लोकप्रियता मिली है और इस बार भी हमें उम्मीद है कि दर्शक और अतिथि इसमें भारी संख्या में संगीत का लुत्फ उठाने आएंगे।

डॉ. हुमड़ को महाराणा प्रताप सम्मान

उदयपुर। विख्यात भूकंप वैज्ञानिक डॉ. जगमोहन हुमड़ को सजीव सेवा समिति द्वारा महाराणा प्रताप सम्मान-2019 से अलंकृत किया गया। समारोह की अध्यक्षता नगर निगम महापौर गोविन्दसिंह टांक ने की। मुख्य अतिथि डॉ. एन. एस. राठौड़ थे।

मुख्य वक्तव्य डॉ. देव कोठारी ने दिया। डॉ. के. एल. कोठारी, डॉ. एल. एल. धाकड़, डॉ. के. पी. तलेसरा, एस. एल. पामेचा, प्रकाश तातेड़ तथा समिति महासचिव शान्तिलाल भंडारी ने समारोह में सक्रिय भूमिका दी।

कोरोनरी ब्लोकेज का शॉकवेव के साथ इलाज संभव

उदयपुर / चित्तौड़गढ़। अहमदाबाद के सुप्रसिद्ध अस्पताल सीम्स में ट्रांस रेडियल इंस्ट्रावस्कुलर लिथोट्रिप्सी (शॉकवेव) का उपयोग कर तीन मामलों में केल्सीफाइड कोरोनरी धमनियों का सफलतापूर्वक उपचार किया गया।

शॉकवेव इंस्ट्रावस्कुलर लिथोट्रिप्सी ध्वनि तरंगों और लिथोट्रिप्सी के सिद्धांत का उपयोग करता है जो कि कम दबाव पर बनाया गया है और कैल्शियम बिल्डअप को चुनौती देता है। इन लगातार तीन मामलों में भारत के शॉकवेव इंट्रावस्कुलर लिथोट्रिप्सी के सिद्धांत का प्रयोग जाने माने डॉ. केयूर पारिख, डॉ. तेजसवी पटेल और सीम्स के विशेषज्ञ व कार्डियोलॉजी टीम के साथ किया गया। शॉकवेव को एक अद्वितीय पल्स जनरेटर के बटन को दबाकर संचालित किया जाता है। सीम्स के डॉ. केयूर पारिख ने बताया कि शॉकवेव इंस्ट्रावस्कुलर लिथोट्रिप्सी वास्तव में एक बहुत बड़ी जीत है। हमें इस सफलता पर बेहद गर्व है कि ये तीनों मामले भारत में ट्रांसराडियल शॉकवेव थेरेपी के पहले मामले थे।

पी.वी. सिन्धु ने की सब्रुत राय सहारा से मुलाकात

उदयपुर। वर्ल्ड बैडमिंटन चैम्पियन पी.वी. सिन्धु ने अपने पिता पी.वी रमना के साथ सहारा इंडिया परिवार के मैनेजिंग वर्कर और चैयरमैन सहारा सब्रुत राय सहारा से सहारा शहर में मुलाकात की। इस दौरान सिन्धु से सहाराश्री ने उनके भविष्य के मुकाबलों के बारे में चर्चा की और उन्हें उनके ओलम्पिक गोल्ड जीतने के प्रयासों के लिये शुभकामनायें दी।

एचडीएफसी बैंक का शुद्ध लाभ बढ़ा

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक लि. ने 31 दिसम्बर 2019 को समाप्त हुयी तीसरी तिमाही के दौरान 7416.5 करोड़ रूपये का शुद्ध मुनाफा अर्जित किया है, जो कि गत वर्ष की इसी तिमाही के 5585.9 करोड़ रूपये के मुकाबलें में 32.8 प्रतिशत ज्यादा है।

बैंक के निदेशक मण्डल की बैठक में पेश वित्तीय परिणामों के अनुसार 31 दिसंबर, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए बैंक का कुल राजस्व (कुल ब्याज आय प्लस अन्य आय) पिछले साल की इसी तिमाही के मुकाबले 19.1 प्रतिशत वृद्धि के साथ 20,842.2 करोड़ रु. हो गया।

31 दिसंबर, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए कुल ब्याज आय (अर्जित ब्याज में से खर्च किया गया ब्याज निकालकर) 19.9 प्रतिशत बढ़कर 14,172.9 करोड़ रु. हो गई, जो 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त हुई तिमाही के लिए 12,576.8 करोड़ रु. थी तथा जमा में 25.2 प्रतिशत की वृद्धि हुई। इस तिमाही के लिए मुख्य कुल ब्याज मार्जिन 4.2 प्रतिशत पर स्थिर रहा।

अन्य आय (गैर-ब्याज राजस्व) 6,669.3 करोड़ रु. रही जो 31 दिसंबर, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए सकल राजस्व की 32.0 प्रतिशत थी। यह 31 दिसंबर, 2018 को समाप्त हुई तिमाही में 4921.0 करोड़ रु. थी। 31 दिसंबर, 2019 को समाप्त हुई तिमाही के लिए अन्य आय का मुख्य तत्व शुल्क व कमीशन है, जो 24.1 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 4526.8 करोड़ रु. हो गया।

ईको का बीएस6 वेरिएन्ट लॉन्च

उदयपुर। बीएस6 बदलाव में अग्रणी मारूति सुजुकी इण्डिया लि. ने देश की सबसे ज़्यादा बिकने वाली मल्टी-परपज़ वैन ईको का बीएस6 वेरिएन्ट का लॉन्च किया। यह वेरिएन्ट 380,800 (एक्स शोरूम दिल्ली) की शुरूआती कीमत पर में उपलब्ध है।

2019 में पहली बार ईको की समग्र बिक्री ने 1 लाख युनिट्स का आंकड़ा पार किया, साथ ही ईको ने 2018 की तुलना में 36 फीसदी की वृद्धि दर्ज की। ईको ने उत्कृष्ट माइलेज, अपने वर्ग में सबसे आरामदायक राईड, स्पेस एवं पावर तथा रखरखाव की कम लागत के साथ अपने आप को मजबूती से स्थापित कर लिया है। मारूति सुजुकी ईको का लॉन्च जनवरी 2010 में किया गया और इसने 6.5 लाख युनिट्स की बिक्री का आंकड़ा पार कर लिया है। ब्राण्ड ईको ने अपने उपयोगी एवं स्पेशियस डिज़ाइन तथा पावरफुल परफोर्मेन्स के साथ वैन सेगमेन्ट में 87 फीसदी मार्केट शेयर हासिल कर निर्विवादित लीडरशिप स्थापित की है। 'परिवार और व्यापार का नंबर 1 साथी' की अवधारणा पर खरी उतरने वाली मल्टी-परपज़ ईको जहां एक ओर परिवार की परिवहन संबंधी ज़रूरतों को पूरा करती है, वहीं दूसरी ओर कारोबार के लिए भी उपयोगी वाहन की भूमिका निभाती है।

मेवाड़ में रासधारी.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

28 अप्रेल 1968 को चित्तौड़ के पास पालका गांव में जाना हुआ। वहां रासधारी के कोलाराम, प्रभुदास, घासी धाकड़, शंकरनाथ, रोड़ा दरोगा, राधाकिशन बड़े नामी कलाकार थे जो क्रमशः राम, लक्ष्मण, रावण, सखी बड़ी, छोटी सखी, ब्रह्मा का अभिनय करते थे। पार्श्वगायक उदयराम थे।

यह रासधारी राम जीवन की रचना होती। इसे रास मंडल तथा रामरूपा भी कहते। इसमें कई तरह की गायकी होती जिसका आम जनता में बड़ा प्रचार था। सारी गायकी अपनी पवित्रता के कारण भजन कहलाती।

पात्र आपस में जो सवाल-जवाब करते वह दोहा झेलना कहलाता। सभी पात्र पांवों में घूंघरू धारण कर नृत्य करते। गणपति, हरणाकुश, प्रहलाद, नृसिंह, हनुमान सब चेहरे (मुखौटे) लगाते। राम लक्ष्मण मुकुट लगाते। मुकुटधारी साधु होते। वाद्यों में ढोलक, ताल (मजीरा) तथा सारंगी होते।

सर्वप्रथम गणपति आकर बिराजमान होते। उनके साथ सखी होती। वह एक-आध भजन कर चली जाती। फिर ब्रह्मा आते। 'नाचो बिरमाजी थांणा पोथी पानड़ा बांचो' गीत पर ब्रह्माजी नाचते। एक कुटकड़िया आता जिसके साथ ब्रह्माजी काटपास की हंसी मजाक भरी बातें करते। गणगौरां निकालते।

कभी पटेलों की लाव टूट गई तो कभी 'सासूजी थांका जाया ने ना जाऊं रोटी देवाने' जैसी दो चार गणगौर निकालने के बाद राम लखन सीता प्रवेश करते। मंच पर जाजम बिछती। वही मुख्य मंच होता। उस पर तारा मंडल यानी कागज की फुर्रियां लगा देते। राम लखन आदि सब सरूप कहलाते। हर सरूप अपना परिचय देता। यह बोल (भजन) बड़ा टीस लिए रहता-

अरे सुरतां लागी वन में /
मात कैकई बोली म्हारे तन में तो लागी
खान पान अजोध्या छोड़ी,
वचन सुन राम चले वन में
पिता वचन पर मान किए,
धनुष बाण लिए कर में
जब रथ हांक दिए हरि वन में,
आनंद तो भयो कैकई के मन में

वनवासी राम के भी मुकुट रहता। मिरगा जब आता तो उसका चेहरा हाथ में पकड़ा रहता। पंचवटी राम की मंडी कहलाती। रावण पेट पर हंड़िया बांधे होता। राम के धनुष लगाने पर वह जोर से फोड़ दी जाती और रावण धड़ाम से गिर जाता। इससे दर्शकों को पता चल जाता कि रावण का खात्मा हो गया है। इस रास मंडल में कृष्ण क्रीड़ावली नहीं दिखाकर रामलीलावली दिखाई जाती। यह रास मंडल है।

इस रास मंडल में आधार तुलसीदास का ही लिया गया है लेकिन इसके बोल-भजन तुलसीदास के नहीं लिखे होने पर भी जगह-जगह तुलसीदास आशा रघुवर की पंक्ति मिलती है। उदाहरण के लिए रावण के संबंध में यह कथन-

आसन मार मंडी में बैठो,
तब जोगी नाद बजायो
तुलसी आशा रघुवर के,
हरि को ध्यान लगायो

सीता-रावण संवाद में सीता का यह कथन-

कार जो लोय र बायर आऊं ओरी बलजल
हो जाऊं खाक भोला तपशी

तुलसीदास आशा रघुवर के जोगी ने लंक सदायो।

यहीं सीता हरण हो जाता है। ख्याल प्रदर्शित करने वाली मंडलियों में होड़ाहोड़ चलती। जनता भी इसमें बड़ा मजा लेती। पाण पर चढ़ जाती। दाव लगाती। इस साल यह दल आया तो अगले साल उसका सवाया दल बुलवाया जाता। कभी-कभी अदाबदी में पैसे को पानी की तरह बहा दिया जाता पर मूंछ का कोई बाल नीचा नहीं होने देता।

सामंतीकाल में .....

(पृष्ठ आठ का शेष)

कुछ ऐसे भी थे जो केवल बाएं हाथ से ही भैंसे का सिर अलग कर देते। पांव के अंगूठे में तलवार पकड़कर भी बकरे का सिर एक झटके में अलग कर देने की क्षमता अनेक में थी। जन समूह के आगे भैंसे को काटकर वह प्रजा का विश्वास दिलाना चाहते थे कि उनके राजा की भुजाओं में शक्ति है। वह प्रजा की रक्षा करने में समर्थ है।

दशहरे के दिन चौगान्या छोड़ा जाता। चौगान लम्बा-चौड़ा मैदान होता था जहां खेल, घोड़ों का प्रदर्शन, हाथी की लड़ाई, मल्ल युद्ध आदि खेल होते थे। चौगान्या छोड़ने के लिए एक भैंसे को खूब खिला-पिलाकर हट्टा-कट्टा बनाते। घुड़सवार भाले और तलवार लिये तैयार रहते। भैंसे को खूब मदिरा पिलाकर मस्त कर देते। घुड़सवार उस पर वार करते। शराब के नशे में चूर भीमकाय भैंसा उन पर लपकता। अपने सींगों से जबरदस्त टक्करें मारता हुआ दौड़ता। बड़ी देर तक यह टक्करें चलती रहती। निर्धारित सीमा से बाहर अगर भैंसा निकल जाता तो फिर उस पर वार नहीं किया जाता।

देवी को हाथी की बलि का चढ़ावा :

दशहरे के मुजरे के बाद महाराणा से देलवाड़ा राजराणा ने अपने ठिकाने जाने की इजाजत मांगी। महाराणा रूखसत देना नहीं चाहते थे। रूकसत लेने का कारण उन्होंने बताया कि वे जाकर राठासेण माता के बलि चढ़ायेंगे। जब दूसरी बार फिर अर्ज की तो महाराणा खींझकर बोले- 'बलि चढ़ाना है, बलि चढ़ाना है। क्या कोई हाथी चढ़ाओगे जाकर जो रूखसत मांग रहे हो।' महाराणा के बोल उनको चुभ गए। दो क्षण मौन रहकर उत्तर दिया- 'विचार तो कुछ ऐसा ही है।'

अंततः राजराणा कल्याणसिंह आए। देलवाड़े के पास एक ऊंची पहाड़ी पर राठासेण माता का पुराना, ख्यातिप्राप्त मन्दिर बना हुआ है। उस पहाड़ी पर हाथी को ले जाकर बलि चढ़ा दी। इस घटना को लेकर कई ग्राम गीत प्रचलित हैं। गिरवा जिले की ग्राम्य ललनाएं राठासेण माता के दर्शनों के लिए पहाड़ी पर चढ़ती हुई गाती जाती हैं-

बाई उदियापुर को राजा, थारे मंदरियो चुणावे।
घाटी री नरसिंघी दुरगा।
बाई देलवाड़ा रो राजा थारे हसतीड़ो चढ़ावे।
ओ बाई मावर ऊभरे रोवे।

अर्थात् - उदयपुर के राजा ने तुम्हारे लिए मंदिर चुणाया। देलवाड़े के राजा ने तुम्हारे हाथी चढ़ाया। उस हाथी का महावत खड़ा-खड़ा रो रहा है।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)

गणतंत्र दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं

MEMBER J.K. ORGANISATION
JK TYRE & INDUSTRIES LTD.

सामन्तीकाल में मेवाड़ का शक्ति शौर्य

-रानी लक्ष्मीकुमारी चूण्डावत-

सामन्तीकाल में नवरात्रि और दशहरे तक सैनिक अपनी-अपनी जागीरों से, घरों से, गांवों से घोड़े, ऊंट, हाथी पर शस्त्रों से सज्जित होकर निकल पड़ते। इन्हें महिलाएं देवी की ज्योति जला तिलक लगा विदा देती। मंगल गीत गाती, गुड़ और दही मुंह में दे शकुन मनाती। मनोकामनाएं गा-गाकर प्रकट करतीं- 'दसरावा को मुजरो, दिवाळ्यां घर की करतो जी ढोला' अर्थात् दशहरे का मुजरा राजाजी से कर दीवाली पर तो घर लौट आते। किसी को तीन महीने की तो किसी को छह महीने की चाकरी पर रहना होता। राजाजी और राज को आवश्यकता पड़ गई तो वहां से किसी मुहिम पर भेज दिया जाता। पता नहीं किस दिशा में, किस युद्ध स्थल पर। पत्नी चाहती, काश पति उसे अपने साथ लेकर जाए। वे प्रेम भरे शब्दों में गाकर आग्रह करतीं-

उदियाणे जावो तो लारां म्हांने लीजो सा
जोधांणे जावो तो लारां म्हांने लीजो सा।

गौरवपूर्ण विदाई :

बड़े सेनानायक अपनी पत्नियों को साथ ले जाते। जोधपुर के महाराजा जसवन्तसिंह के साथ उनकी रानियां काबुल, पेशावर और लाहौर गई थी। शस्त्र-अस्त्र से सजा हुआ वीर घोड़े पर सवार हो विदा होता। राजपूतनी अपने पुत्र और प्रियतम को वीर वेश में देख गौरव से फूल जाती थी। वे उसके वीर वेश और उसके साथी घोड़े को निहार-निहार पुलकित होकर गातीं-

बंको थांरो घोड़ो म्हारा राज
बंको थांरो जोड़ो आलीजा जी
बंको थांरो साईना रो साथ
बंको म्हांरो राठौड़ रो साथ जी।

अर्थात् बांका घोड़ा और बांका ही सवार। रणबांकुरे ही तुम्हारे साथी हैं। यह रणबांके राठौड़ों की रणबांकी सवारी है। प्रस्थान करते समय पत्नी अपने जोड़ी के ढोला को निरखती हुई थकती नहीं। निरखती भी और परखती भी। सैनिक सेवा के लिए जा रहे पति की आवश्यकताएं भी उसके ध्यान में हैं-

आगी रीजो ए सैंया पाछी रीजो ए
ओ जी म्हारा ऊगता सूरज ने
म्हाने निरखण दीजो ए
सींयाळा री रूत हो गैंदा
ओ जी ढोला थूरमा दुसाला
रावलां लारां लीजो सा
आगी रीजो ए सैयां पाछी रीजो ए
ओ जी म्हारा केसर रा क्यारा ने
म्हांने निरखण दीजो ए
ऊनाला री रूत हो गेंदा
ओजी ढोला जैपुर की डांडी रो
पंखो लारे लीजो सा
आगी रीजो ए सैयां पाछी रीजो ए
ओ जी म्हारा मोतीड़ा जी लंबा ने
म्हांने निरखण दीजो ए
चौमासा रो रूत हो गेंदा
ओ जी ढोला डेरा ने तंबू
रावळा लारां लीजो सा
आगा रीजो ए सैंया पाछो रीजो ए
ओ जी म्हारा बरसालू बादळ ने
म्हांने निरखण दीजो ए
निरखण दीजो ए परखण दीजो ए

अर्थात्- सहेलियों! जरा पीछे हटो, इधर रहो। मुझे आने दो, मेरे उगते सूर्य को मुझे निरखने दो। शीत ऋतु आ गई है। ढोला! शॉल, दुशाला अपने साथ ले जाना। सखियों! जरा हटो! मुझे आने दो। मेरे केशर क्यारे जैसे सुंदर पति को निरखने दो। गर्मी की ऋतु आएगी। ढोला! जयपुर की डांडी का पंखा साथ में ले लो। सखियों! मुझे अपने मोतियों की लूंब जैसे प्रिय को निरखने दो। वर्षा ऋतु आएगी। डेरे, तंबू साथ लेते जाओ। सहेलियों! जरा पीछे हटो। मुझे आने दो। मेरे बरसालू बादल जैसे मारू को निरखने दो। निरखने दो, मुझे परखने दो नवरात्रा का शुभारम्भ खड्ग पूजा से होता। पूरी नवरात्रि खड्ग की पूजा की जाती। अखण्ड दीप प्रज्वलित रखा जाता। जुवारे (जौ) मिट्टी के पात्र में बो कर खड्ग के आगे रखे जाते। राजवंशों के घरों में पूजा के लिए अपने-अपने खड्ग या खांडे होते।

उदयपुर में खड्ग स्थापना :

उदयपुर के खड्ग के लिए कहा जाता है कि जब पद्मिनी मेवाड़ की अनेक वीरांगनाओं के साथ जौहर की ज्वाला में भस्म हो गई और अल्लाउद्दीन खिलजी ने चित्तौड़ पर कब्जा कर लिया तब मेवाड़ के शासकों की तेरह पीढ़ी ने अपना रक्त चित्तौड़ की मुक्ति के लिए बहाया पर चित्तौड़ को मुक्त नहीं करा पाए। तब राणा हमीर को पद्मिनी ने देवी रूप में दर्शन देकर खड्ग दे कहा- 'इस खड्ग से तुम मातृभूमि के बंधन काटो।' इसी खड्ग से राणा हमीर ने मेवाड़ भूमि के बंधन काटकर जय ध्वज फहराया। तबसे लगातार इसी खड्ग की पूजा की जाती रही है। इसकी बनावट तलवार की तरह बांकी न होकर सीधी हेती है। खड्ग के दोनों ओर धार होती है।

लादूवास गांव के नाथ सम्प्रदाय के महन्त खड्ग को अपनी गोदी में लेकर बैठते। पूरे नौ दिन यथावत मुद्रा में बैठे रहते। हिलना न डुलना, खाना न पीना। नवरात्रि पूर्ण होने पर जवारा पात्र का विसर्जन भव्य समारोह में किया जाता। राठौड़ राजपूत कुलदेवी नागणेच्यां की, सिसोदिया बाणेश्वरी माता की, चौहान आशापुरा देवी की, कछवाहा जमुवाय माता की और झाला आदमाता की अर्चना करते हैं। ये उनकी कुलदेवियां हैं। अन्य देवियां कालिका, अंबा, चामुण्डा, करणीजी आदि की पूजा की जाती है। नवरात्रि में श्रद्धानुसार व्रत तथा उपवास रखे जाते हैं। चारण कवि मूर्ति के सामने खड़े हो हाथ जोड़ छन्द बोलते हैं। डिंगल भाषा में चारण कवि जब परम्परागत शैली में गीत बोलने लगते तो वातावरण प्रचण्ड राजस्थानी पौरुष से परिपूर्ण हो जाता-

झळे त्रिशूल भाळ शत्रमूळ धारणी
प्रगत्त चत्त पूळ भाळ चाळ भाळ चारणी।
चढ़े लंकाळ बांध गाळ रौद्र रात्तड़ा
भंजे निसुम्भ सुम्भ रूप आप आवड़ा।

रणचण्डी भवानी चारण कवि के ओजस्वी शब्दों में शक्ति बनकर उतर आती। श्रोताओं के रोम-रोम खड़े हो जाते। अलौकिक उत्साह से अंतरात्मा विभोर हो उठती।

शक्तिवंत घोड़ा पूजा :

राजस्थान शताब्दियों से शक्तिपूजक रहा है। यहां शक्ति पूजा का अर्थ था अपनी संस्कृति और आजादी की रक्षा। इन पर आक्रमण करने वालों को मिटा देना अथवा स्वयं मिट जाना। यही यहां का कर्तव्य था और यही धर्म। घोड़े की पूजा विधिवत मंत्रोच्चार से होती। रियासतों में और ठिकानों में पूजा का घोड़ा अलग होता। पंच कल्याण और अष्टमंगल घोड़ा शुभ माना जाता। जिस घोड़े के चारों पांव और ललाट का तिलक श्वेत रंग के होते वह पंच कल्याण कहलाता। जिसके चारों पांव, तिलक, मुख, कनौती और पूंछ पर सफेद रंग होता वह अष्टमंगल कहलाता। घोड़े का रूप, कद, मजबूती, तेजी आदि गुण देखे जाते। बीकानेर राज्य में पूजा का घोड़ा 'दलसिणगार' कहलाता। इस अवसर पर नीसांण की पूजा भी की जाती। ध्वज को नीसांण कहते हैं। प्रत्येक राज्य और ठिकानों के अपने-अपने नीसांण होते और अपने-अपने प्रतीक।

रणबाजखां मेवाती मेवाड़ के पुर और मांडल के परगनों पर कब्जा करने के लिए शाही फौज

लेकर आया था। खारी नदी के किनारे पर मेवाड़ी सेना ने उसे रोक दिया। घमासान लड़ाई हुई। रणबाजखां के पास चुने हुए तीरन्दाज थे। मेवाड़ी सैनिकों ने चारों ओर से इस तेजी से हमला किया कि तीरन्दाजों को कमान पर दूसरा तीर चढ़ाने का मौका ही नहीं दिया। रणबाजखां मारा गया। शत्रु की सेना भाग छूटी।

निसांण पूजा :

मेरे पूर्वज देवगढ़ के रावत संग्रामसिंह ने रणबाजखां की सेना का नीसांण छीन लिया। यह नीसांण हमारे यहां सुरक्षित रखा है। इसका नाम हुसैनी नीसांण है। नवरात्रि में हमारे नीसांण की पूजा के साथ हुसैनी नीसांण की भी पूजा की जाती है। यह हमारी विजय ट्राफी है इसलिए इसे सम्मान भी देते हैं। नक्कारे की पूजा की जाती। सभी राजघरानों के अपने नक्कारों के पारंपरिक नाम हैं।

भाटियों का अगनजोत नक्कारा है। रणजीत, जसवंत आदि नक्कारों के नाम हैं। बीकानेर का वेरीशाल नक्कारा राठौड़ों को अपने प्राणों से भी प्यारा था। इसकी रक्षा के लिए अनगिनत वीरों ने प्राण दे दिये पर शत्रु के हाथ में उसको जाने नहीं दिया। बीकानेर के कुंवर पदमसिंह दक्षिण में युद्ध पर थे। शत्रु का अचानक आक्रमण बड़ा तीव्र था। वेरीशाल नक्कारा बजाता घोड़े पर सवार अन्ना दमामी सेना के आगे चल रहा था। उसने देखा शत्रु को बढ़ने से रोक नहीं सकेंगे। वे इस नक्कारे को छीन कर ले जायेंगे। उसने कटार से नक्कारे को फाड़ डाला और खुद का पेट फाड़ नक्कारे के साथ शहीद हो गया पर नक्कारे को शत्रु के हाथ में जाने नहीं दिया। इस युद्ध में कुंवर पदमसिंह भी वीरगति को प्राप्त हो गए। जय दुन्दुभि, जय ध्वज, घोड़े और शस्त्रों की पूजा करते समय भुजाएं फड़क उठती थी।

शौर्य-शक्ति प्रदर्शन :

विजयादशमी पर सरदार तथा सैनिक राजधानी में इकट्ठे हो जाते। तरह-तरह के शक्ति एवं शौर्य के प्रदर्शन चलते रहते। घोड़ों को सरपट दौड़ा कर मेख उपड़ाई करते। दुवाग्गो को सम्भाल घुड़सवार शस्त्र प्रहार करते। दांतों से घोड़े की लगाम पकड़ दोनों हाथ से तलवार चलाने का कौशल दिखाते। घोड़े की नंगी पीठ पर सवार हो नदी पार करते। झील के गहरे पानी में घोड़े उतार परले पार पहले पहुंचने की शर्तें लगती। करैती के हाथ दिखाते। तीरन्दाजी की जाती। भाले के वार की प्रतिस्पर्धा होती। बन्दूक से चांदमारी की जाती। कुश्तियों के आयोजन होते। चिकनी मिट्टी से भैंसा बनाया जाता। उस भैंसे की गर्दन पर तलवार मारने की प्रतियोगिता होती। चिकनी मिट्टी में तलवार का जाना बड़ी ताकत मांगता है। देखा जाता कि कितने अंगुल गहरा किसका वार गया है। केले के पेड़ पर बच्चों को तलवार चलाना सिखाया जाता। घुड़सवार हाथी को ललकारते। हाथी क्रोधित हो सवार पर लपकता। सवार उससे बचते, हाथी को छेड़ते। इसके लिए चौगान बने हुए थे। वास्तविक युद्ध में हाथी से मुकाबला करने के लिए यह शिक्षा थी।

राणा प्रताप का घोड़ा चेतक भी पाखर से रक्षित था। चेतक को उन्होंने शत्रु के हाथी पर कुदाया था। शत्रु के हाथी की सूंड में तलवार थी इसलिए चेतक के कूदकर नीचे आते समय उस तलवार से घोड़े का पांव कट गया था। कई पाखर तो बड़े ही सुंदर प्रभावित करने वाले होते। पाखर के सिर पर हाथी का मुंह और सूंड भी लगी होती। लगता घोड़े के मुंह के स्थान पर हाथी है। सैनिकों के हाथों में चमकते हुए भाले। कमर में लटकती तलवार। कमरबंध में खोंसी हुई कटार। रामपुरा के बने सेल। सोरठ की बनी तलवार, सिरोही की बनी कटार।

कई धातुओं के मिश्रण से फौलाद के किस्म की तलवारें राजस्थान में ही बनती थीं। ऊना, सकेला, बीजलसार आदि कई लोहे या फौलाद की किस्में थी। अश्वारोही की पीठ पर गेंडे, मगरमच्छ अथवा भैंसे की खाल की ढाल बंधी होती। गेंडे की खाल की ढाल श्रेष्ठ मानी जाती। 'बाघ नख' भी हाथ के पंजे में रखे जाते जो शेर के पंजे की तरह बना होता और उसमें फौलाद के नुकीले नाखून होते। हाथी, ऊंट और घोड़े पर कसे नक्कारों पर चोब पड़ती। सैकड़ों नीसांण फहराते हुए सवारी चलती और नौबतों की तुमुल ध्वनि, घोड़ों की हीस, हाथियों के गले में बंधे वीर घंट से वायुमण्डल प्रकंपित हो जाता। इस दृश्य को देख कायरों के दिल दहल जाते।

दशरावे पर बलि प्रसंग :

दशहरे के दिनों में देवी को बकरे और भैंसे की बलि दी जाती। उदयुपर में प्रतिदिन भैंसे की बलि दी जाती। सभी जागीरदार बलि देते। हाथों में तलवार पकड़ बलि दी जाती।

-शेष पृष्ठ सात पर

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।